श्री ठकुरानीजी का सिनगार दूसरा
मंगला चरण

बरनन करूं बड़ी रूह की, जो हक नूर का अंग।
रूहें नूर इन अंग के, जो हमेसा सब संग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री श्यामाजी महारानी जो श्री राजजी के नूर का अंग हैं और बारह हजार रूहें जो श्यामा महारानी के नूर के अंग है और हमेशा श्यामा महारानी के संग रहती हैं, उनकी हकीकत का वर्णन करती हूं।

हक जात अंग अर्स का, क्यों कर बरनन होए।
इन सरूप को सुपन भोम का, सब्द न पोहोंचे कोए।। २ ।।

श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के अंग हैं और परमधाम में ही रहते हैं, इसलिए इनके सरूप का सपने के संसार में बैठकर कैसे वर्णन करूं? यहां के कोई भी शब्द उस शोभा का वर्णन करने योग्य नहीं हैं।

किन देख्या सुन्या न तरफ पाई, तो क्यों दुनियां सुन्या जाए।
जो अरवा होसी अर्स की, सो सुन के सुख पाए।। ३ ।।

आज दिन तक किसी ने भी अखण्ड परमधाम को देखा नहीं। कुछ कहा नहीं और न उसके बारे में किस तरफ है, जाना नहीं तो दुनियां में उस अखण्ड घर की पहचान कैसे मिले? जो परमधाम की आत्मा होगी, वही इसे सुनकर सुख पाएगी।

मेरी रूह चाहे वरनन करूं, होए ना बिना अर्स इलम।
वस्तर भूखन अर्स के, इत पोहोंचे ना सुपन का दम।। ४ ।।

मेरी आत्मा श्यामा महारानीजी की हकीकत वर्णन करना चाहती है। वह बिना निज बुद्धि की वाणी के सम्भव नहीं है। परमधाम के वस्त्र और आभूषणों की शोभा वर्णन करने में दुनियां के शब्द उन्हें नहीं पहुंच सकते।

पेहेने उतारे इन जिमी, नाहीं अर्स में चल विचल।
इत नकल कोई है नहीं, अर्स वाहेदत सदा असल।। ५ ।।

पहनना और उतारना इस संसार में होता है। परमधाम में चल-विचल नहीं होता। परमधाम की नकल संसार में है ही नहीं। परमधाम की वाहेदत में तो सदा हर चीज असल ही है।

घट बढ़ अर्स में है नहीं, मिटे न कबूं रोसन।
तिन सरूप को इन मुख, क्यों कर होए बरनन।। ६ ।।

परमधाम में घट-बढ़ नहीं होती और न कुछ बनता-मिटता ही है, तो ऐसे श्री श्यामाजी महारानी के सुन्दर स्वरूप का यहां के मुख से कैसे वर्णन करें?

एक पेहेर दूजा उतारना, तब तो घट बढ़ होए।
जब जैसा जित चित्त चाहे, तब तित तैसा बनत सोए।। ७ ।।

एक पहनना दूसरा उतारना हो तो घट-बढ़ हो, परन्तु जैसी चित्त में इच्छा हो उसी के अनुसार सिनगार पहले से बना दिखाई देता है।

Nijanand App

अर्स अरवा चाहे दिल में, सो होए माहें पल एक।
जिन अंग जैसा वस्तर, होए खिन में कई अनेक।। ८ ।।

परमधाम की रूहें जो दिल में चाहना करती हैं वह एक पल में पूरी हो जाती हैं। जिनके अंग में जैसे वस्त्र चाहिए, एक पल में अनेक वस्त्र बदल जाते हैं।

सुन्दर सरूप सोभा लिए, सिनगार वस्तर भूखन।
रस रंग छबि सलूकी, चाहे रूह के अन्तस्करन।। ९ ।।

रूह जैसा मन में विचार करती है उसी तरह से उनके स्वरूपों के सिनगार, वस्त्र और आभूषणों की सलूकी की छबि दिखाई देने लगती है।

वस्तर भूखन अंग अर्स के, सो सबे हैं चेतन।
सब सुख देवें रूह को, तो क्यों न देवें नैन श्रवन।। १० ।।

परमधाम के वस्त्र आभूषण सब चेतन हैं जो रूहों को सब तरह के सुख देते हैं, तो नेत्र और कान भी क्यों सुख नहीं देंगे, अर्थात् देंगे।

नया सिनगार साजत, तब तो नया पेहेन्या कह्या जात।
नया पुराना अर्स में नहीं, पर पोहोंचे न इतकी बात।। ११ ।।

नया सिनगार सजे तो नया पहना कहा जाता है? परमधाम में नया-पुराना है ही नहीं, तो फिर यहां की बात परमधाम में कैसे पहुंचे?

जो सिफत बड़ी चित्त लीजिए, बड़ी अकल सो जान।
फना बका को क्या कहें, ताथें पोहोंचत नहीं जुबान।। १२ ।।

यहां की महिमा को चित्त में ही धारण किया जा सकता है। जो ऐसा करे उसी की बड़ी अक्ल है। नहीं तो मिट जाने वाले संसार की जबान अखण्ड परमधाम का वर्णन कैसे कर सकती है?

तो भी रूह मेरी ना रहे, हक बरनन किया चाहे।
हक इलम आया मुझ पे, सो या बिन रह्यो न जाए।। १३ ।।

मेरे पास श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान आ गया है, इसलिए मेरी रूह अखण्ड सत का वर्णन किए बिना नहीं रह सकती।

ना तो बैठ झूठी जिमी में, ए बका बरनन क्यों होए।
इलम हुकम खैंचे रूह को, अकल जुबां कहे सोए।। १४ ।।

वरना झूठी जमीन में बैठकर अखण्ड का वर्णन करना कैसे सम्भव हो सकता है? श्री राजजी महाराज का हुकम और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी आत्मा को अपनी तरफ खींचती है, इसलिए यहां बैठकर मैं अखण्ड का वर्णन करती हूं।

यासों रूह सुख पावत, अर्स रूहें पावें आराम।
कहूं सिखाई रूहअल्ला की, ले साहेदी अल्ला कलाम।। १५ ।।

ऐसा करने से मुझे तथा रूहों को सुख मिलता है। अब मैं श्यामा महारानीजी के सिखापन (शिक्षा) से और कुरान की गवाही लेकर वर्णन करती हूं।

Nijanand App

हक इलम सिर लेय के, वरनन करूं हक जात।
रूह मेरी सुख पावहीं, हिरदे बसो दिन रात।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान के बल से श्री राजजी की अंगना श्यामा महारानी का वर्णन करती हूं। ऐसा करने से मेरी रूह को सुख होगा और रात-दिन मेरे सुभान श्यामा महारानी मेरे हृदय में बसे रहेंगे।

मोमिन दिल अर्स कह्या, सो अर्स बसे जित हक।
निसबत मेहेर जोस हुकम, और इस्क इलम बेसक।। १७ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और जहां अर्श है वहीं श्री राजजी रहते हैं। जिस मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज हैं वहीं जोश, हुकम, इश्क और इलम निश्चित रूप से होते हैं।

ए बरकत हक अर्स में, तो दिल अर्स कह्या मोमिन।
तो बरनन होए अर्स का, जो यों दिल होए रोसन।। १८ ।।

यह सब बरकतें अर्श में रहती हैं, इसलिए मोमिन के दिल को अर्श कहा है। जब इस तरह की सब बरकतें (न्यामतें) दिल में हों, तभी परमधाम का वर्णन हो सकता है।

बारीक बातें अर्स की, सो जानें अर्स के तन।
जीवत लेसी सो सुख, जिनका टूट्या अन्तस्करन।। १९ ।।

परमधाम की बातें बहुत बारीक हैं। इन्हें परमधाम के तन मोमिन ही जान सकते हैं, इसलिए वह मोमिन जिनका दिल संसार से टूट चुका हो वही संसार में बैठकर अखण्ड सुख ले सकते हैं।

छाती मेरी कोमल, और कोमल तुमारे चरन।
बासा करो तिन पर, तुमसों निसबत अर्स तन।। २० ।।

हे श्यामा महारानी! मेरी छाती बड़ी नर्म है। आपके चरण कमल भी नर्म हैं। फिर परमधाम में आपसे हमारे तनों की निसबत है, इसलिए हमारे हृदय में आकर बस जाओ।

मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखो नरम कदम।
इतहीं सेज बिछाए देऊं, जुदे करो जिन दम।। २१ ।।

मेरी छाती में दिल कोमल है। उसमें नर्म चरण कमलों को रखो। मैं आपके लिए इस दिल में ही सेज बिछा देती हूं, इसलिए अब आप एक पल भी मुझे चरणों से दूर न करें।

रूह छाती इनसे कोमल, तिनसे पांउं कोमल।
इत सुख देऊं मासूक को, सुख यों लेऊं नेहेचल।। २२ ।।

मेरी रूह की छाती दिल से भी कोमल है। उससे भी कोमल आपके चरण कमल हैं। इस रूह की छाती में, हे श्यामा महारानी! आपको बिठाकर सुख दूं और आपसे अखण्ड परमधाम के सुख लूं।

मेरी रूह नैन की पुतली, बीच राखूं तिन तारन।
खिन एक न्यारी जिन करो, ए चरन बसें निस दिन।। २३ ।।

मेरी रूह के नैनों की पुतली और पुतली के अन्दर तारों में आपके चरण कमलों को रात-दिन बसा कर रखूंगी, इसलिए एक क्षण के लिए भी अपने चरण कमलों को मुझसे अलग न करों।

Nijanand App

चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल।
निस दिन राखों इन पर, जिन आवने देऊं बीच पल।। २४ ।।

आपके चरणों की तली अति कोमल है और इस तरह से मेरी रूह के नैन कोमल हैं। अब इन कोमल नैनों में कोमल चरण कमल को रात दिन बसाकर रखूंगी और पलक भी झपकने नहीं दूंगी।

या रूह नैन की पुतली, तिन नैनों बीच तारन।
इत रहे सेज्या निस दिन, धरो उज्जल दोऊ चरन।। २५ ।।

मेरी रूह के नैन की पुतली के बीच के तारों में आपके लिए रात-दिन सेज बिछी है, इसलिए अपने दोनों सुन्दर चरण कमलों को रखो।

मेरा दिल तुमारा अर्स है, माहें बहुबिध की मोहोलात।
कई सेज हिंडोले तखत, रूह नए नए रंगों बिछात।। २६ ।।

मेरा दिल ही आपका अर्श है जिसमें तरह-तरह की मोहोलातें, सेज, हिंडोले और तख्त हैं। मेरी रूह उनको नई-नई शोभा से सजाती है।

आसा पूरो सुख देओ, नए नए कराऊं सिनगार।
द्यो पूरी मस्ती ना बेहोसी, सुख लेऊं सब अंग समार।। २७ ।।

मेरे हृदय में आकर मेरी सब इच्छा को पूरी करके सुख दो। मैं भी आपको नए-नए सिनगारों से सजाऊंगी। आप मुझे अपनी पूरी मस्ती देना, बेहोशी नहीं, ताकि मैं सब अंगों को संभालकर आपके सुख ले सकूं।

अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात।
खाना पीना सुख सिनगार, माहें सब न्यामत हक जात।। २८ ।।

मेरे दिल में ही तुम्हारा अर्श है। जिसमें कुल सामान हैं। मेरे दिल में ही आपके खाने का, पीने का, सिनगार के सामान और रूहें रहती हैं।

सब गुझ तुमारे दिल का, जिन मेरा दिल किया रोसन।
जेता मता बीच अर्स के, सब आया दिल मोमिन।। २९ ।।

आपके दिल के छिपे रहस्य ने ही मेरी आत्मा को जगाया है। इस तरह से परमधाम की कुल हकीकत का ज्ञान मोमिनों के दिल में आ गया है।

तो कह्या अर्स दिल मोमिन, हक बैठें उठें खेलाए।
सुख बका हक अर्स रूहें, सिफत क्यों कहे दिल जुबांए।। ३० ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है जहां श्री राजजी महाराज उठते हैं, बैठते हैं और खेलते हैं। अखण्ड परमधाम के सुख रूहें अपने दिल में लेती हैं तो ऐसे दिल की महिमा जबान से कैसे कहें?

पर दिल के जो अंग हैं, धनी अर्स तुमारा सोए।
तुमें देखें कहे बातें सुने, लेवे तुमारी बानी की खुसबोए।। ३१ ।।

हे श्यामा महारानी! आपके दिल के अंग जो रूहें हैं, उनका दिल भी आपका अर्श है। वह सभी आपके दर्शन करती हैं। आपसे बातें करती, सुनती हैं और आपकी वाणी का आनन्द लेती हैं।

Nijanand App

पिए तुमारी सुराही का, कई स्वाद फूल सराब।
ऐसी लेऊं मस्ती मेहेबूब की, ज्यों उड़ जावे ख्वाब।। ३२ ।।

हे धनी! तुम्हारे दिल की सुराही इश्क की शराब पीकर मस्ती में आती हैं जिससे यह सपना उड़ जाए।

एक स्वाद दिल देखे तुमको, सुने तुमारी बानी की मिठास।
लेऊं खुसबोए बोलूं तुमसों, और क्यों कहूं दुलहा विलास।। ३३ ।।

आपके इश्क के प्याले पी लेने से मेरे दिल को आपको देखने का तथा मीठे वचनों को सुनने का स्वाद मिल जाता है। तुम्हारे साथ बोलकर आनन्द लूं। दुल्हा के विलास से सुख होता है। उसको कैसे कहूं?

जेता सुख तुमारे अर्स में, सो सब हमारे दिल।
ए सुख रूह मेरी लेवहीं, जो दिए इन अर्स में मिल।। ३४ ।।

हे धनी! जितना सुख तुम्हारे परमधाम में है, उतना सुख हमारे दिल में है। यह सुख मेरी रूह लेती है जो सुख आपने मेरे दिल को अर्श बनाकर दिए।

रूह बरनन करे क्या होए, जोलों स्वाद न ले निसबत।
इस्क इलम जोस हुकम, ए सब मेहेरें पाइए न्यामत।। ३५ ।।

रूह के वर्णन करने से क्या होता है जब तक उसके अन्दर अंगना होने का भाव न आए। इश्क, इलम, जोश और हुकम यह सब न्यामते श्री राजजी महाराज की मेहर से ही मिलती हैं।

दिल के अंगों बिना हक के, इत स्वाद लीजे क्यों कर।
देखे सुने बोले बिना, तो क्या अर्स नाम धर्‍या धनी बिगर।। ३६ ।।

हे श्यामा महारानी! आपके तथा आपके अंग मोमिन के तथा श्री राजजी महाराज के बिना यहां सुख कैसे मिलें? क्योंकि बिना धनी को देखे, बिना उनसे बातें किए, बिना सुने, बिना दिल को अर्श किए, कैसे कहा जाए?

जो मासूक सेज न आइया, देख्या सुन्या न कही बात।
सुख अंग न लियो इन सेज को, ताए निरफल गई जो रात।। ३७ ।।

जब तक श्री राजजी महाराज दिल की सेज पर नहीं आए, तब तक न उनको देखा और न उनसे बातें कीं और न ही सेज का सुख लिया, तो उसकी रात भी बेकार गई, अर्थात् जीवन व्यर्थ गया।

अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात।
सब न्यामतें इनमें, अर्स बका हक जात।। ३८ ।।

मेरा दिल आपका अर्श है जिसमें अर्श की सब न्यामतें हैं। इसी तरह से सब रूहों के दिल में भी सब न्यामतें हैं।

पेहेले बरनन करूं सिर राखड़ी, पीछे बरनन करूं सब अंग।
अखंड सिनगार अर्स को, मेरी रूह हमेसा संग।। ३९ ।।

अब सबसे पहले श्यामा महारानी के सिर के ऊपर की राखड़ी का वर्णन करती हूं। उसके बाद सब अंगों का वर्णन करूंगी, फिर श्यामा महारानी के अखण्ड सिनगार का वर्णन करूंगी जिनके साथ मेरी रूह हमेशा रहती है।

।। मंगला चरण सम्पूर्ण ।।

Nijanand App

सिर पर बनी जो राखड़ी, कहूं किन बिध सोभा ए।
आसमान जिमी के बीच में, एकै जोत खड़ी ले।।४० ।।

श्री श्यामा महारानीजी के सिर पर जो राखड़ी (बीज) बंधी है, उसकी शोभा का कैसे बयान करूं? आसमान जमीन के बीच में केवल उसी की ही जोत दिखाई देती है।

गिरदवाए मानिक बने, बीच हीरे की जोत।
किनार ऊपर जो नीलवी, हुई जिमी अंबर उद्दोत।।४१ ।।

उसके बीच में हीरा है। चारों तरफ माणिक के नग जड़े हैं। किनारे के ऊपर नीलवी के नगों की शोभा आई है; जिसकी तरंगें आसमान तक जाती हैं।

सेंथे भी सिर कांगरी, और सिर कांगरी पांन।
इन सिर सोभा क्यों कहूं, अलेखे अमान।।४२।।

सिर के ऊपर मांग में कांगरी बनी है। वह कांगरी पीछे जाकर पानड़ी का रूप बन जाती है। श्री श्यामाजी के इस सिनगार की शोभा का कैसे वर्णन करूं? यह शोभा बेशुमार है और इसकी कोई उपमा नहीं है।

माहें हारें खजूरे बूटियां, बीच फूल करत हैं जोत।
जुदे जुदे रंगों जवेर, ठौर ठौर रोसनी होत।।४३ ।।

इसके बीच हारें, खजूरे, बूटियां और फूल अलग-अलग रंगों के तथा नगो की रोशनी जगमगाती है।

लाल सेंथे जोत जवेर की, दोए पटली समारी सिर।
बनी नंगन की कांगरी, बल बल जाऊं फेर फेर।।४४ ।।

मांग में लाल सिन्दूर भरा है तथा दो पटली में (दावनी में) जवेर जड़े हैं जो सिर पर शोभा देती हैं। इस पटली में नगों की कांगरी बनी है, जिस पर मैं बार-बार बलिहारी जाती हूं।

निलवट पर सर मोतिन की, ऊपर नीलवी बीच मानिक।
दोऊ तरफों तीनों सरें, तीनों बराबर माफक।।४५ ।।

माथे (मस्तक) पर मोतियों की लरें आई हैं, जिनके ऊपर नीलवी तथा बीच में माणिक की शोभा है। इस तरह की तीन लरें मांग के दोनों तरफ शोभा देती हैं।

इन तीनों पर कांगरी, बनी सेंथे बराबर।
पांन कटाव सेंथे पर, ए जुगत कहूं क्यों कर।।४६ ।।

इन तीनों लरों के ऊपर कांगरी बनी है, जो मांग के साथ शोभा देती है। मांग पर पीछे पान का कटाव बना है। यह शोभा कैसे बयान करूं?

मानिक मोती नीलवी, हेम हीरा पुखराज।
इन मुख सोभा क्यों कहूं, सिर खूबी रही बिराज।।४७ ।।

माणिक, मोती, नीलवी, हीरा और पुखराज सोने में जड़े राखड़ी में चमक रहे हैं। इस मुख से उस शोभा का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

बीच फूल कटाव कई, राखड़ी के गिरदवाए।
ए जुगत बनी मूल लग, गूंथी नंग मोती बेनी बनाए।।४८ ।।

राखड़ी के चारों तरफ फूल और कटाव की शोभा आई है। ऐसी युक्ति राखड़ी के पिछले भाग तक है। आगे चोटी मोतियों के नगों से गूंथी हुई शोभायमान है।

तीन नंग रंग गोफने, तिन एक एक में तीन रंग।
हीरा मानिक नीलवी, सोभित कंचन संग।।४९ ।।

चोटी के तीन गोफनों के तीन नग हैं। हर एक नग के तीन-तीन रंग हैं। हीरा, माणिक और नीलवी के नग सोने के साथ गोफने के साथ झलकते हैं।

तीनों गोफने घूंघरी, बेनी गूंथी नई जुगत।
बल बल जाऊं देख देख के, रूह होए नहीं तृपित।।५० ।।

तीनों गोफनों के किनारे पर घुंघरियां (बोरियां) लगी हैं। चोटी एक नई तरह से गूंथी है। जिसे देख-देखकर वारी-वारी जाती हूं। फिर भी आत्मा की तृप्ति नहीं होती।

चारों बंध बेंनी तले, नीले पीले सोभित।
सोभे नरम बंध चोलीय के, खूबी साड़ी तले देखत।।५१ ।।

चोटी के नीचे चोली (ब्लाउज) की चारों तनी पीठ पर बंधी हैं। नीले और पीले रंग की शोभा देती है। चोली के नर्म बन्ध साड़ी के नीचे से दिखाई देते हैं।

बेनी सोभित गौर पीठ पर, चोली और बंध चोली के।
सब देत देखाई साड़ी मिने, सब सोभा लेत सनंध ए।।५२ ।।

गोरी पीठ के ऊपर चोली के बन्ध व चोटी शोभित हैं जो साड़ी के अन्दर से झलकती हैं। इस तरह की सुन्दर शोभा है।

लाल साड़ी कई नकस, माहें अनेक रंग के नंग।
मिहीं नकस न होवे गिनती, करें जवेर माहें जंग।।५३ ।।

लाल रंग की साड़ी है, जिसमें नक्शकारी की है। जिसमें अनेक तरह के नग जड़े हैं। बारीक नक्शकारी के जड़ाव बेशुमार हैं। गिनती में नहीं आते। यहां के जवेरों की किरणें आपस में टकराती हैं।

सिर पर साड़ी सोभित, नीली पीली सेत किनार।
तिन पर सोहे कांगरी, करें पांच नंग झलकार।।५४ ।।

सिर पर नीली, पीली और सफेद किनारे वाली साड़ी है जिसमें कांगरी के पांच रंग के नगों की झलकार होती है।

साड़ी कोर किनार पर, नंग कांगरी सोभित।
फूल बेल कई खजूरे, कई छेड़ों मिने झलकत।।५५ ।।

साड़ी के पल्ले और किनारे पर नगों की कांगरी, फूल, बेल और कई तरह के खजूरे झलकते हैं।

Nijanand App

कई छापे बूटी नकस, नंग साड़ी बीच अपार।
कई नंग रंग झलके बीच में, सोभा न आवे माहें सुमार।।५६ ।।

लाल साड़ी के बीच बेशुमार छापे, बूटियां, नक्शकारी और नग हैं। कई तरह के नगों के रंग साड़ी के बीचोंबीच झलकते हैं, जिनकी शोभा का पार नहीं।

मुख उज्जल गौर लालक लिए, छबि जाए न कही जुबांए।
देख देख सुख पावत, रूह हिरदे के माहें।।५७ ।।

श्री श्यामाजी का मुखारबिन्द गोरा, उज्ज्वल लालिमा लिए है, जिसकी छवि का वर्णन जबान से नहीं हो सकता। उसे देख-देखकर रूहें अपने दिल में सुख पाती हैं।

मुख चौक नेत्र नासिका, ए छबि अंग अर्स के।
असलें सिफत न पोहोंचहीं, बुध माफक कही ए।।५८ ।।

श्री श्यामाजी का मुखारबिन्द चौक, नेत्र और नासिका की छबि परमधाम के अंग की है जो अखण्ड है। यहां के झूठे शब्द उपमा के लिए नहीं पहुंचते। फिर भी मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन किया है।

मुखारबिन्द स्यामाजीय को, रूह देख देख सुख पाए।
निलवट सोहे चांदलो, रूह बलिहारी ताए।।५९ ।।

श्री श्यामाजी के माथे पर बैंदा (टीका) शोभा देता है जिसे देखकर रूहें बलिहारी जाती हैं। श्री श्यामाजी के मुखारबिन्द को देखकर रूह को बेहद सुख मिलता है।

रंग नीले जोत पाच में, रूह इतथें क्यों निकसाए।
जो जोत देखूं मानिक, तो वाही में डूब जाए।।६० ।।

नीले रंग की जोत हरे रंग में देखकर रूह अटक जाती है। यदि माणिक की जोत देखती है तो उसमें मग्न हो जाती है।

करे आकास मोती उज्जल, जोत लटके लेवे तरंग।
आसिक रूह क्यों निकसे, क्योंए न छूटे लग्यो दिल रंग।।६१ ।।

मोती उज्ज्वल हैं। उनकी लटकने की तरंगें आकाश तक जाती हैं। रूहें जो आशिक हैं और जिन्हें ऐसी मस्ती मिल गई है, वह ऐसी शोभा को कैसे छोड़ सकती हैं?

श्रवनों सोहे पानड़ी, मानिक के रंग सोए।
और रंग माहें नीलवी, जोत करत रंग दोए।।६२ ।।

कानों में पानड़ी की बनावट के टाप्स हैं, जिसमें माणिक और नीलवी के नग जड़े हैं। दोनों की किरणें टकराती हैं।

मोती पांने पुखराज, लरें लटकत इन।
तरंग उठत आकास में, किरना करत रोसन।।६३ ।।

मोती, पन्ना और पुखराज की लरें टोप्स में लटकती हैं, जिनकी किरणें आकाश में झलकती हैं।

Nijanand App

मुरली सोभित मुख नासिका, लटके मोती नंग लाल।
निरख देखूं माहें नीलवी, तो तबहीं बदले हाल।। ६४ ।।

मुख के ऊपर नासिका में बेसर लटकती है, जिसमें लाल और मोती के नग लटक रहे हैं। नीलवी के नग की शोभा देखूं तो चित्त बेहाल हो जाता है।

न्यारी गति नैनन की, अति अनियारे लोचन।
उज्जल माहें लालक लिए अतंत तेज तारन।। ६५ ।।

नैनों की चाल ही अलग है। वह नुकीले हैं तथा उज्ज्वलता में लालिमा की रेखाएं और बीच के तारों में अत्यन्त तेज है।

भौं भृकुटी अति सोभित, रंग स्याम अंग गौर।
केहेनी जुबां न आवत, कछू अर्स रूहें जानें जहूर।। ६६ ।।

भौंहे काले रंग की हैं जो गोरे अंग पर शोभा देती हैं। यहां की जबान से उनकी शोभा कही नहीं जाती। परमधाम की रूहों को उनका अनुभव है।

सोभा लेत हैं टेढ़ाई, नैना रंग रस भरे।
ए सोई रूहें जानहीं, जाकी छाती छेद परे।। ६७ ।।

नैनों का तिरछापन और इश्क की मस्ती को वही रूहें जानती हैं जिनकी छाती में यह चुभ गए हैं।

मीठे नैन रसीले निरखत, माहें सरम देत देखाए।
प्यार पूरा देखत, मेहेर भरे सुखदाए।। ६८ ।।

नैन मीठे और रसीले हैं जिनमें लज्जा समाई है। वह पूरे प्यार से और मेहर भरी सुखदाई नजर से देखते हैं।

अनेक गुन इन नैन में, गिनती न होवे ताए।
सुख देत अलेखे सब अंगों, नैना गुन क्यों ए ना गिनाए।। ६९ ।।

इनके नैन बेशुमार गुणों से भरे हैं जिनकी गिनती नहीं हो सकती। वैसे उनके सभी अंग बेशुमार सुख देते हैं, परन्तु नैनों के गुण बेशुमार हैं।

सनकूल मुख अति सुंदर, गौर हरवटी सलूक।
लांक अधुर दंत देखत, जीव होत नहीं टूक टूक।। ७० ।।

मुखारबिन्द और हरवटी गोरे रंग की है और अति सुन्दर है। होठों और हरवटी के बीच की गहराई तथा दांतों को देख-देखकर भी जीव टूक-टूक क्यों नहीं होता?

मुख चौक अति सुन्दर, अति सुन्दर दोऊ गाल।
कही न जाए छबि सलूकी, निपट उज्जल माहें लाल।। ७१ ।।

मुखारबिन्द और दोनों गाल अति सुन्दर हैं। इनकी बनावट की छवि का वर्णन हो ही नहीं सकता। यह गोरे रंग में लालिमा लिए हैं।

Nijanand App

सात रंग माहें झलकत, लेहेरें लेत दोऊ झाल।
दोऊ फूल सोभित मुख झालके, जुबां क्या कहे इन मिसाल।।७२ ।।

कानों के दोनों झालों में सात रंगों के नग झलकते हैं। इन झालों की लटकन और फूल की शोभा जो मुख पर आई है, बेमिसाल है। इसका यहां की जबान से वर्णन कैसे करूं?

फिरते मोती सोभित, माहें मानिक पाच कुंदन।
हीरे लसनिए नीलवी, सातों अम्बर करे रोसन।।७३ ।।

इन झालों में घेरकर मोती आए हैं तथा बीच में सोने के अन्दर माणिक, पाच, हीरा, लसनियां और नीलवी यह सात नग जड़े हैं, जो आकाश तक जगमगाते हैं।

हेंम नंग नाम लेत हों, जानों के पेहेने बनाए।
ए बिध अर्स में है नहीं, जुबां सके न सिफत पोहोंचाए।।७४ ।।

सोने के और नगों के नाम लेने से ऐसा लगता है मानो कि किसी ने इन्हें बनाया है, पर परमधाम में कोई चीज बनती नहीं है, इसलिए यहां की जबान से इनकी सिफत हो ही नहीं सकती।

कई रंग करे एक खिन में, नई नई जुगत देखाए।
सोहे हमेसा सब अंगों, पेहेने सोभित चित्त चाहे।।७५ ।।

एक पल के अन्दर एक नग के कई रंगों की युक्तियां दिखाई देती हैं। लगता है कि यह शोभा सर्वदा से ही सब अंगों में चाहे अनुसार पहने हैं।

चीज सबे अर्स चेतन, वस्तर या भूखन।
सुख लेत हक के अंग का, यों करत अति रोसन।।७६ ।।

परमधाम के वस्त्र हों या आभूषण, सभी चेतन हैं। यह श्री राजजी महाराज के अंग का सुख लेते हैं और जगमगाहट करते हैं।

हर नंग में सब रंग हैं, हर नंग में सब गुन।
सो नंग ले कछू न बनावत, सब दिल चाह्या होत रोसन।।७७ ।।

हर एक नग में सभी रंग हैं तथा गुण हैं, इसलिए किसी भी नग को लेकर कुछ बनाना नहीं पड़ता। सब दिलचाहा बन जाता है।

वस्तर भूखन केते कहूं, हेम रेसम रंग नंग।
ना पेहेन्या ना उतारिया, ए दिल चाह्या सोभित अंग।।७८ ।।

वस्त्र, आभूषण, सोना, रेशम और नग कहां तक कहूं, सब दिल के चाहे अनुसार अंग पर शोभा देने लगते हैं। यहां पहनना और उतारना नहीं होता।

यों दिल चाह्या वस्तर, और दिल चाह्या भूखन।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, आगूं रोसन होए माहें खिन।।७९ ।।

यहां दिल की चाहना अनुसार ही वस्त्र, आभूषण एक क्षण में पहले से ही हर अंग पर शोभा बदली दिखती है।

Nijanand App

सुन्दर सरूप छबि देख के, फेर फेर जाऊं बल बल।
जो रूह होवे अर्स की, सो याही में जाए रल गल।। ८० ।।

श्री श्यामा महारानी के ऐसे सुन्दर स्वरूप को देखकर मैं बार-बार बलिहारी जाती हूं। परमधाम की जो रूह (मोमिन) होगी, वह ऐसी शोभा में गर्क हो जाएगी।

नरम लांक अति बारीक, पेट पांसली अति गौर।
ए छबि रूह रंग तो कहे, जो होवे अर्स सहूर।। ८१ ।।

पीठ की गहराई बड़ी बारीक है। पेट, पसलियां सब गोरे रंग के हैं। इस छबि को रूह तब वर्णन करे जब परमधाम की जागृत बुद्धि उसके पास हो।

बल बल जाऊं मुख सलूकी, बल बल जाऊं रंग छब।
बल बल जाऊं तेज जोत की, बल बल जाऊं अंग सब।। ८२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के मुखारबिन्द की छबि, रंग, तेज और सब अंगों परे बलि-बलि जाऊं।

स्याम चोली अंग गौर पर, सोभा लेत अतंत।
सोहे बेली कटाव, जुबां कहा कहे सिफत।। ८३ ।।

गोरे रंग पर काले रंग की चोली बेहद शोभा देती है, जिसमें बनी बेलें और कटाव की सिफत कहने में नहीं आती।

मोहोरी पेट और खड़पे, चोली नकस कटाव।
बाजू खभे उर ऊपर, मानो के फूल जड़ाव।। ८४ ।।

चोली के मोहोरे, पेट के ऊपर, स्तनों के ऊपर के खड़पे, चोली के नक्शकारी और कटाव बाजुओं के खभे पर तथा उर (छाती) पर बने फूल नगों से जड़े हैं।

पांच हार अति सुन्दर, हीरे मानिक मोती लसन।
नीलवी हार आसमान लों, जंग पांचों करें रोसन।। ८५ ।।

पांच हार हीरा, माणिक, मोती, लसनियां और नीलवी के अति सुन्दर हैं। जिनकी किरणें आसमान तक टकराती हैं।

इन नंगों जोत तब पाइए, जब नजर दीजे आसमान।
सब जोत जंग करत हैं, कोई सके न काहू भान।। ८६ ।।

इनकी तरंगों का टकराना तब देखा जा सकता है जब नजर सीधी आसमान में करें। इन रंगों की तरंगें एक-दूसरे को मिटा नहीं सकतीं, क्योंकि सब रंगों का तेज एक समान है।

जो नंग पेहेले देखिए, पीछे देखिए आकास।
तब याही की जोत बिना, और पाइए नहीं प्रकास।। ८७ ।।

यदि किसी नग को पहले देख लें और पीछे आकाश की ओर देखें, तो सब जगह एक उसी नग की रोशनी दिखाई पड़ेगी। बाकी सभी की रोशनी ढक जाएगी।

Nijanand App

बीच हारों के दुगदुगी, पाच पांने हीरे नंग।
माहें लसनिए नीलवी, करें पांचों आपुस में जंग।।८८।।

हीरों के बीच दुगदुगी लटकती है जिनमें पाच, पन्ना, हीरा, लसनियां और नीलवी के पांचों रंग आपस में टकराते हैं।

पांचों हारों के ऊपर, दोरा देखत जड़ाव।
कई बेल फूल पात नकस, कह्यो न जाए कटाव।।८९।।

पांचों हारों के ऊपर एक जड़ाव डोरा नजर आता है, जिसमें कई तरह के बेल, फूल, पत्ते, नक्शकारी और कटाव बने हैं।

मोती मानिक पांने लसनिएं, पाच हेम पुखराज।
और भूखन कई सोभित, रह्या सब पर डोरा बिराज।।९०।।

मोती, माणिक, पन्ना, लसनियां, पाच, पुखराज, सोना और कई किस्म के आभूषणों के ऊपर यह डोरा शोभा देता है।

कांठले ऊपर चोलीय के, बेल धरत अति जोत।
और भी मानिक मोती नीलवी, डोरा तिन पर करे उद्दोत।।९१।।

चोली के गले के किनारे पर सुन्दर बेलें शोभा दे रही हैं। माणिक, मोती, नीलवी और डोरा (चेन) उनके ऊपर झलकता है।

चार सरें इत चीड़की, हर सर में रंग दस।
सो रंग इन जुबां न आवहीं, रंग रूह चाहिल अर्स।।९२।।

चीड़ के हार की चार लरें और हर लर में दस रंग शोभा देते हैं। उन रंगों का वर्णन इस जबान से कहने में नहीं आता। परमधाम की रूहों को इन हारों के रंगों को अपने चित्त से अनुभव करना है।

कण्ठ-सरी इन ऊपर, रही कण्ठ को मिल।
न आवे निमूना इनका, जाने आसिक रूह का दिल।।९३।।

श्री श्यामाजी महारानी के गले में कंठसरी शोभा देती है। उसका कोई नमूना नहीं है। यह अर्श के आशिक रूहों के दिल ही जानते हैं।

नाम नंगों का लेत हों, केहेत हों जड़ाव जुबांए।
सब्दातीत तो कहावत, जो सिफत इत पोहोंचत नाहें।।९४।।

मैं नगों का नाम लेती हूं और जड़ाव का वर्णन यहां की जुबान से करती हूं, परन्तु यह शोभा शब्दातीत है। इसकी महिमा कहने में नहीं आती।

दोऊ बाजू बन्ध बिराजत, तामें केहेत जड़ाव।
माहें रंग नंग कई आवत, ए जड़ाव कह्या इन भाव।।९५।।

दोनों भुजाओं में जड़ाव के बाजूबन्ध शोभा देते हैं, जिसमें कई नगों के रंग दिखाई देते हैं। इस भाव से इसे जड़ाव कहा है।

Nijanand App

जो सोभा बाजू–बन्ध में, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए।
मैं कहूं इन दिल माफक, वह पेहेनत हैं चित्त चाहे।। ९६ ।।

बाजूबन्ध की शोभा का करोड़वां हिस्सा कहने में नहीं आता। श्यामा महारानी अपने चित्त के अनुसार पहनती हैं और मैं अपने दिल के अनुसार वर्णन करती हूं।

स्याम सेत लाल नीलवी, बाजू–बंध और फुमक।
तिन फुंदन जरी झलकत, लेत लेहेरी जोत लटकत।। ९७ ।।

काला, सफेद, लाल और नीलवी बाजूबन्ध में फुम्मक के फुंदड़ों में जरी झलकती है, जिसकी किरणें हिलते समय झलकती हैं।

मोहोरी तले जो कंकनी, स्वर मीठे झन बाजत।
नंग कटाव ए कांगरी, चूड़ पर जोत अतन्त।। ९८ ।।

चोली की मोहोरी के नीचे कंकनी पहनी है, जिसके स्वर सुहावने हैं और किनारे पर कटाव, कांगरी बनी है जो चूड़े के ऊपर शोभा देती है।

चूड़ कोनी काड़े लग, चूड़ी चूड़ी हर नंग।
नंग नंग कई रंग उठें, तिन रंग रंग में कई तरंग।। ९९ ।।

कोहनी के किनारे चूड़ियां पहनी हैं। उसके आगे चूड़ा पहना है और चूड़ी-चूड़ी में हर किस्म के नग जड़े हैं। नग-नग में कई रंग और रंग-रंग में कई तरंगें उठ रही हैं।

इन विध के रंग इन जुबां, क्यों कर आवे सुमार।
न आवे सुमार रंग को, ना कछू जोत को पार।। १०० ।।

इस तरह के रंगों का वर्णन यहां की जबान से कैसे करूं? न रंगों का शुमार है और न तरंगों का।

चूड़ आगूं डोरे दो सोभित, और कंकनी सोभे ऊपर।
दोऊ तरफों तेज जोत के, कंकनी बोलत मीठे स्वर।। १०१ ।।

चूड़ियों के आगे दो डोरे शोभा देते हैं और ऊपर कंकनी शोभा देती है। जिससे सुन्दर मीठी आवाज आती है और दोनों तरफों से उसकी सुन्दरता फैलती है।

डोरे कंचन नंग के, तिन आगूं नवघरी।
नव रंग नवघरी मिने, रही आकास जोत भरी।। १०२ ।।

दोनों डोरे कंचन के नग के है। उनके आगे नवघरी पहन रखी है। नवघरी के नौ रंग है जिनकी जोत आकाश में फैली है।

पोहोंचे हथेली हाथ के, अतन्त रंग उज्जल।
बलि जाऊं छबि लीकों पर, निपट अति कोमल।। १०३ ।।

हथेली के पोहोंचे और हाथ का रंग अत्यन्त उज्ज्वल है। हाथ की रेखाओं पर मैं बलिहारी जाती हूं जो अधिक कोमल हैं।

Nijanand App

दोऊ हाथ की अंगुरी, पतलियां कोमल।
चरन न छूटे आसिक से, इतथें न निकसे दिल।। १०४ ।।

दोनों हाथों की उंगलियां पतली और कोमल हैं। आशिक मोमिनों के दिल से चरण ही नहीं छूटते, तो यहां की शोभा कैसे दिल से निकलेगी?

पांच पांच अंगुरी जुदी जुदी, अति कोमल छबि अंगुरी।
दोऊ अंगूठों आरसी, और आठों रंग आठ मुन्दरी।। १०५ ।।

पांचों उंगलियां जुदा-जुदा तरह की हैं, जो अत्यन्त कोमल और सुन्दर हैं। दोनों अंगूठों में आरसी हैं और आठ उंगलियों में आठ रंग की आठ मुंदरियां हैं।

पाच पांने कंचन के, नीलवी और हीरे।
लसनिएं और गोमादिक, रंग पीत पोखरे।। १०६ ।।

पाच, पन्ना, कंचन, नीलवी, हीरा, लसनियां, गोमादिक और पुखराज के नगों की आठ मुंदरियां हैं।

दरपन रंग दोऊ अंगूठी, और नंगों के दरपन।
कर सिनगार तामें देखत, नख सिख लग होत रोसन।। १०७ ।।

दोनों अंगूठों में दर्पण के रंग की मुंदरियां हैं और नगों के दर्पण हैं। श्री श्यामाजी महारानी अपना सिनगार उसमें देखती है, जिसमें नख से शिख तक का सिनगार दिखता है।

आगूं इन नख जोत के, होवें सूर कई कोट।
सो सूर न आवे नजरों, एक नख अनी की ओट।। १०८ ।।

इन उंगलियों के आगे नाखूनों की जोत करोड़ों सूर्यों से भी अधिक है। नख के एक अंश के सामने वह सूर्य दिखाई नहीं देता।

ए झूठ निमूना इत का, हक को दिया न जाए।
चुप किए भी ना बने, केहे केहे रूह पछताए।। १०९ ।।

सूर्य का झूठा नमूना अखण्ड नाखून को नहीं दिया जाता, परन्तु चुप भी रहा नहीं जाता और झूठी उपमा कहने से रूह पछताती है।

नीली अतलस चरनियां, कई बेल कटाव नकस।
चीन किनारे जो देखों, जानों एक पे और सरस।। ११० ।।

नीले रंग की अतलस की चरनियां (पेटीकोट) पहने हैं, जिसमें कई तरह के बेल, कटाव और नक्शकारी है। किनारे की चुन्नट यदि देखो तो एक से एक अच्छी लगती है।

माहें बेल फूल कई खजूरे, नंगै के वस्तर।
नरम सखत जो दिल चाहे, जोत सुगंध सब पर।। १११ ।।

इसके अन्दर कई तरह के बेल, फूल और खजूरे हैं। वस्त्र सारे नगों के हैं जो दिल के चाहे अनुसार सख्त या कोमल हो जाते हैं। इनकी किरणें और सुगन्धि सबके ऊपर शोभा देती है।

Nijanand App

नव रंग इन नाड़ीं मिने, ताना बाना सब नंग।
जानों बने जवेरन के, नकस रेसम या रंग।। ११२ ।।

नाड़े के अन्दर नौ रंग हैं जिसके ताने बाने सब नगों के हैं। लगता है वह जवेरों का ही बना है या फिर रेशम में रंगों की नक्शकारी की गई है।

अचरज अदभुत देखत, वस्तर या भूखन।
नरम खूबी खुसबोए, भरया आसमान में रोसन।। ११३ ।।

वस्त्र या आभूषण सभी विचित्र दिखाई देते हैं। इनमें नरमाई, खूबी और खुशबू है, जिसकी जोत आसमान तक फैली है।

अर्स में नकल है नहीं, ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन।
जब जिन अंग जो चाहिए, तिन सौ बेर होए मिने खिन।। ११४ ।।

परमधाम में नकल नहीं है। जैसे अखण्ड अंग नूर के हैं वैसे ही वस्त्र और आभूषण नूर के हैं। अब जिस अंग को जो चाहिए वह एक क्षण में सौ बार बदल जाते हैं।

जैसा सुख दिल चाहे, वस्तर भूखन तैसे देत।
सब गुन अर्स चीज में, सब सुख इस्क समेत।। ११५ ।।

दिल में जैसे सुख की चाहना हो वस्त्र आभूषण वैसे ही सुख देते हैं। परमधाम की हर एक चीज में सब गुण और इश्क भरा है, जिससे सब तरह के सुख मिलते हैं।

ए चरन अंग अर्स के, सब्द न पोहोंचे इत।
लाल उज्जल रंग सलूकी, मुख कही न जाए सिफत।। ११६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के चरण अर्श के अंग हैं। मेरी वाणी संसार की है जो अखण्ड का वर्णन नहीं कर पाती। इन चरणों का रंग लाल उज्ज्वल है तथा बनावट अति सुन्दर है। जिसकी सिफत नहीं की जा सकती।

मैं कहूं सिफत सलूकी, पर केहे न सकों क्योंए कर।
पूरा एक अंग केहे ना सकों, जो निकस जाए उमर।। ११७ ।।

मैं सलूकी की महिमा कहना चाहती हूं, परन्तु किसी तरह से कह नहीं पाती। मेरी संसार की पूरी उम्र भर में एक अंग का भी वर्णन सम्भव नहीं है।

जो कदी कहूं नरमाई की, और लीकों सिफत।
आए जाए आरबल, सब्द न इत पोहोंचत।। ११८ ।।

यदि नरमाई और रेखाओं की सिफत कहने लगूं तो पूरी उम्र बीत जाए, फिर भी यहां के शब्दों से वर्णन नहीं हो सकता।

जो कहूं खूबी रंग की, जोत कहूं लाल उज्जल।
ए क्यों आवे सब्द में, जो कदम बका नेहेचल।। ११९ ।।

यदि रंग की खूबी का बयान करूं तो उसकी किरणें लाल कहूं कि उज्ज्वल कहूं? यह अखण्ड परमधाम के चरणों की शोभा शब्दों में कही नहीं जाती।

Nijanand App

रंग उज्जल नरमाई क्यों कहूं, और चरन की खुसबोंए।
ए जुबां अर्स चरन की, क्यों कर बरनन होए।। १२० ।।

चरणों के रंग और उज्ज्वलता, नरमाई और खुशबू का कैसे बयान करूं? यहां की जबान से परमधाम के चरण का कैसे वर्णन हो?

फना टाकन घूटियां, और काड़े अति कोमल।
रंग सोभा सलूकी छोड़के, आगूं आसिक न सके चल।। १२१ ।।

चरणों का पंजा, टखना, घूंटी और कड़ा सब कोमल हैं। इनके रंगों की शोभा और सुन्दरता को छोड़कर आशिक रूहें आगे चल ही नहीं सकतीं।

अब कहूं भूखन चरन के, कांबी कड़ली घूंघरी।
झलके नंग जुदे जुदे, इन पर झन बाजे झांझरी।। १२२ ।।

अब चरणों के आभूषण कहती हूं जिनमें कांबी, कड़ला, घुंघरी और झांझरी के अलग-अलग नग झलकते हैं और झांझरी की आवाज होती है।

एक हीरे की झांझरी, दिल रुचती रंग अनेक।
नकस कटाव बूटी ले, ए किन विध कहूं विवेक।। १२३ ।।

एक हीरे की झांझरी है जिसमें अनेक रंग दिल की चाहना अनुसार दिखाई देते हैं। इनमें नक्शकारी, कटाव और बूटियां हैं, जिनका वर्णन कैसे करूं?

पांच नंग की घूंघरी, दिल रुचती बोलत।
दिल चाहे रंग देखावत, दिल चाही सोभित।। १२४ ।।

पांच नगों की घुंघरी, मन की चाहना अनुसार बोलती है। मन के चाहे अनुसार ही उनके अंग दिखाई देते हैं।

कई रंग कड़ी में देखत, जानों के हेम नंग जड़ित।
सो सोभित सब दिल चाहे, नित नए रूप धरत।। १२५ ।।

कड़े में कई रंग दिखाई देते हैं, लगता है सोने में नग जड़े हैं, वह भी दिल की चाहना अनुसार पल-पल रूप बदल लेते हैं।

कई बेल कड़ी में पात फूल, सब नंग नकस कटाव।
मानो हेम मिलाए के, कियो सो मिहीं जड़ाव।। १२६ ।।

कड़े में कई तरह की बेलें, पत्ता, फूल नक्शकारी, कटाव सब नगों सहित शोभा देते हैं, लगता है सोने में बड़ी बारीकी से जड़े हैं।

या विध कांबी सनंध, या नंग या धात।
जैसा दिल में आवत, तैसा तित सोभात।। १२७ ।।

इसी तरह से कांबी की हकीकत है जिसके नग या धातु दिल की इच्छा के अनुसार शोभा देते हैं।

Nijanand App

घड़े जड़े ना किन किए, दिल चाह्या सब होत।
दिल चाह्या मीठा बोलत, दिल चाही धरे जोत।। १२८ ।।

इन्हें न तो किसी ने बनाया है और न जड़ाव में ही जड़ा है। यह सब दिल की चाहना से हो जाता है। दिल की चाहना से ही उनमें मीठे स्वर और तरंगें निकलती हैं।

कहूं अनवट पाच के, माहें करत आंभलिया तेज।
निरखत नखसिख सिनगार, झलकत रेजा रेज।। १२९ ।।

चरणों के अंगूठे के अनवट पाच के नग के हैं जिनके बीच दर्पण शोभा देता है। उन दर्पणों में नख से शिख के पूरे सिनगार की छबि दिखाई देती है।

और अंगुरियों बिछिए, करे स्वर रसाल।
हीरे और लसनिएं, मानिक रंग अति लाल।। १३० ।।

उंगलियों में सुन्दर बिछिया पहने हैं जिनसे सुन्दर आवाज निकलती है। इनके रंग, हीरा, लसनियां, माणिक के शोभा देते हैं।

माहें और रंग हैं कई, कई नकस करें चित्र।
सोभा पर बलि जाइए, देख देख एह विचित्र।। १३१ ।।

इन बिछुओं में कई तरह के रंग, नक्शकारियां और चित्र हैं। इनकी विचित्र शोभा को देखकर बलिहारी जाती हूं।

जो सलूकी फनन की, और अंगुरी फनों तली।
ए बका बरनन कबूं न हुई, गई अव्वल से दुनी चली।। १३२ ।।

पांव के पंजे की सलूकी तथा पंजे के नीचे का भाग और उंगलियों का वर्णन जो अखण्ड परमधाम की हैं, आज तक कभी नहीं हुआ।

सलूकी नखन की, और छबि अंगुरियों।
खूबी सिफत चरन की, कही न जाए जुबां सों।। १३३ ।।

उंगलियों के नखों की सलूकी तथा उंगलियों की छबि और चरणों की महिमा इस जबान से कहने में नहीं आती।

जोत धरत आकास रोसनी, क्यों कर कहूं नख जोत।
मानों सूरज अर्स के, कोटक हुए उद्दोत।। १३४ ।।

नख की किरणें आकाश तक फैली हैं जिसकी जोत का वर्णन कैसे करूं, लगता है करोड़ों सूर्य उदय हो गए हों।

दोऊ अंगूठे चरन के, और खूबी अंगुरियों।
सोभा सुन्दर फनन की, आवत ना सिफत मों।। १३५ ।।

चरण कमलों के दोनों अंगूठे और उंगलियों की खूबी तथा पंजे की सुन्दरता का बयान नहीं किया जा सकता।

Nijanand App

मिहीं लीकां देखूं लांक में, इतहीं करूं विश्रामं।
बल बल जाऊं देख देख के, एही रूह मोमिनों ताम।। १३६ ।।

पंजे की तले की गहराई में बारीक रेखाएं देखकर लगता है इसे ही देखती रहूं और देख-देखकर बलिहारी जाऊं, क्योंकि यही खुराक रूह (मोमिनों) की है।

चरन तली लांक एड़ियां, उज्जल रंग अति लाल।
केहेते छबि रंग चरन की, अजूं लगत न हैड़े भाल।। १३७ ।।

चरणों की तली की गहराई तथा एड़ियों का रंग लाल उज्ज्वल है। चरणों की छबि को वर्णन करने में हाय! हाय! अभी तक कलेजा फट क्यों नहीं गया?

दिल चाही खूबी सलूकी, दिल चाही नरम छब।
दिल चाह्या रंग खुसबोए, रही दिल चाही अंग फब।। १३८ ।।

चरणों की सलूकी, नरमाई, छबि, रंग और खुशबू जैसी दिल को अच्छी लगती है वैसे ही हो जाती है।

यों दिल चाहे वस्तर, और दिल चाहे भूखन।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, सो आगूंहीं बन्यो रोसन।। १३९ ।।

इसी तरह से दिल चाहे वस्त्र और आभूषण पहले से ही बन जाते हैं और जिस अंग को जो चाहिए वहीं मिल जाता है।

जिन अंग जैसा भूखन, दिल चाह्या सब होत।
खिन में दिल और चाहत, आगूं तैसी करे जोत।। १४० ।।

जिस अंग में जैसा आभूषण चाहिए वैसे ही दिल की चाहना अनुसार एक पल में हो जाता है। एक ही पल में दिल की चाहना बदलती है तो शोभा भी बदल जाती है।

खिन में सिनगार बदले, बिना उतारे बदलत।
रंग तित भूखन नए नए, रंग जो दिल चाहत।। १४१ ।।

सिनगार बिना उतारे ही एक पल में बदल जाते हैं। इसी तरह से आभूषणों के रंग नए-नए दिल चाहे बदल जाते हैं।

दिल चाही सोभा धरे, दिल चाही खुसबोए।
दिल चाही करे नरमाई, जोत करे जैसी दिल होए।। १४२ ।।

मन की इच्छानुसार इनकी शोभा, खुशबू, कोमलता और तेज बदल जाता है।

रूहें बसत इन कदमों तले, जासों पाइए पेहेचान।
सब रूहें नूर इन अंग को, ए नूर अंग रेहेमान।। १४३ ।।

परमधाम की रूहें इन चरणों तले रहती हैं। सभी रूहें श्री राजजी महाराज के अंग श्री श्यामाजी के अंग हैं। यही रूहों की पहचान है।

Nijanand App

ए जो अरवाहें अर्स की, पड़ी रहें तले कदम।
खान पान इनों इतहीं, रूहें रहें तले कदम।। १४४ ।।

यह परमधाम की रूहें हैं। इन्हीं चरणों में इनका ठिकाना है। इनका खाना-पीना, रहना सब चरणों तले है।

याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकूल।
हक अर्स मोमिन दिल, तिन निमख न पड़े भूल।। १४५ ।।

इन चरणों में ही रात-दिन रूहें आनन्द से रहती हैं। श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिन का दिल है। इसमें जरा भी भूलने की बात नहीं है।

हक कदम हक अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल।
छूटे ना अर्स कदम, जो याही की होए मिसल।। १४६ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल श्री राजजी महाराज के अर्श, अर्थात् मोमिनों के दिल में हैं, इसलिए मोमिनों के दिल से श्री राजजी महाराज के चरण अलग नहीं होते, क्योंकि मोमिन श्री राजजी महाराज के समान हैं।

ए चरन राखूं दिल में, और ऊपर हैड़े।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए।। १४७ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे सुन्दर चरण कमलों को अपने दिल में, अपने हृदय में, अपने नैनों में अपने सिर पर लेकर घूमूं।

भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन।
भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन।। १४८ ।।

नैनों के बीच में रखूं और हृदय की आंखों में रखूं। फिर रूह के नैनों में रखूं। जिससे रूह को सुख और करार मिले।

महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तस्करन।
या रूह नैन की पुतली, बीच राखों तिन तारन।। १४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इन चरणों को रूह के अन्तस्करण में बसा लूं या फिर रूह के नैनों की पुतली के तारों में बांध लूं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ७९९ ।।

श्री राजजी का सिनगार तीसरा

फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं तृपित।
मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के स्वरूप को बार-बार देखने पर भी नैनों की प्यास बुझती नहीं। मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज उनके दिल को अपना अर्श कर बैठे हैं।

Nijanand App